अध्याय पाँचवा

" जैनेन्द्रकुमार की कहानियों के नारी पात्रों की विशेषाताएँ "

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में मुन्शी प्रेमचन्दोत्तर साहित्यकारों में जैनेन्द्रकुमारजी का अपना विशिष्ट स्थान है। हिन्दी कहानी जगत् में रचनाओं का अन्तर्जगत् व्यवहारिक मनोविज्ञान के धरातल पर आधारित है। हिन्दी में सर्व प्रथम मानव के अन्तर्मन के संसार को नये मनोवैज्ञानिक सत्यों, तथ्यों तथा अनुभावों के आधार पर उजागर करने का प्रयत्न किया है।

प्रेमचन्द के उपरान्त हिन्दी कहानी साहित्य को नया मोड देने में जैनेन्द्रकुमार का स्थान अग्रगण्य है। अपनी कहानियों में मानव के अन्तर्मन को उद्वेलित करनेवाली विभिन्न प्रवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषाण किया है। कहानी के साथ-साथ कहानियों के पात्रों का मनोविश्लेषाण किया है। कहानी के हर एक पात्र सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, आदि परिस्थितियों से कुण्ठित हैं।

जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों में पात्रों की मन:स्थिति का बाह्य परिस्थितिसे संघार्ष दिखाकर सूक्ष्म विश्लेषाण हुआ है। कहानियों में पात्रों के मानसिक बारीकियों का आधिक्य होने के कारण मन:स्थिति की सूक्ष्मताओं का अंकन अधिक हुआ है।

लेखकने अपने कहानियों में स्त्री-पुरुषा के पारस्पारिक

सम्बन्धों पर ही नहीं अपितु जीवन के अन्य पहलुओं का सूक्ष्म अंकन करने की ओर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

लेखकने सामान्य जीवन से कथावस्तु लेकर रोचक ढंग से जीवन के कारुणिक एवं -हृदयविदारक दृश्यों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। इन दृश्यों में सामाजिक, विषमता, आर्थिक असमानता जीवनगत विसंगति आदि के साथ-साथ व्यक्ति परिवार, वर्ग एवं समाज के यथार्थ जीवन की स्वाभाविक तथा मनोवैज्ञानिक झाँकियाँ मिलती है, जीवन के व्यापक अंगो की व्याख्यायें मिलती है, विशिष्ट जीवन की द्रुत अभिव्यक्ति भी मिलती है, और चिन्तनाशील व्यक्तित्व के साथ-साथ निश्चित नैतिक धारणा, अनुभूति और सांस्कृतिक प्रेरणा का चित्रण भी मिलता है।

जैनेन्द्रकुमारने जहाँ अपनी दार्शनिक कहानियों में समाज की यथार्थवादी समस्याओं को सांसारिक घटनाओं के व्दारा उपस्थितित करते हुए अपने सूक्ष्म सिध्दान्तो, सांस्कृतिक प्रेरणाओं, तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों का चित्रण किया है, वहाँ अपनी मनोवैज्ञानिक कहानियों में व्यक्तियों के चरित्र का सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करते हुए उनके जीवन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। इन कहानियों के कथानक अपेक्षाकृत अधिक कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक है इनके आरंभ एवं अन्त आकर्षक है इनमें घटनाओं एवं संयोगो का सहारा कम लिया गया है। कहानियाँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक तत्वों से निर्मित होते हुए भी इनके कथानकों में से ही कहीं भी कथा तत्वों का सर्वथा लोप नहीं हुआ है।

जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ अपना पृथक अस्तित्व रखातीहै, क्योंकि इनमें प्रेमचन्द की कहानियाँ जैसी घटना बहुलता, नाटकिय

चढाव-उतार, आकस्मिक संयोगवादिता आदि का सर्वथा अभाव है किन्तु इनका अन्तरिक संघर्ष स्वयंही कथानक की सूक्ष्मता सांकेतिकता एवं उतार-चढाव-हीन सहजता को ग्रहण कर लेता है। इसीलिए इनको सामाजिक यथार्थ की कहानियाँ न कहकर व्यक्ति मन के यथार्थ की कहानियाँ कहना अधिक युक्तिसंगत लगता है।

जैनेन्द्रकुमार ने अपनी दार्शनिक कहानियों में प्राय:ऐतिहासिक पौराणिक, लौकि, आध्यात्मिक, भावात्मक, काल्पनिक एवं प्रति-कात्मक चरित्रोंकी सृष्टि की है। मनोवैज्ञानिक कहानियों के चरित्रों व्दारा जीवन के विविध अंगो की व्याख्या अत्यन्त प्रभावपूर्ण ढंगसे हुई है। कहानी के सभी पात्र यथार्थवादी, चिन्तनशिल एवं विशिष्ट गुणसम्पन्न है। सभी पात्र किसी न किसी वर्ग, जाति या समूह के प्रतिनिधि है और इनका चरित्र - चित्रण प्राय: आत्म विश्लेषण, मानसिक उथल-पुथल अवचेतन की विज्ञाप्ति, संकेतो, विविध क्रियाकलापों आदि के व्दारा किया गया है। इन कहानियों में कथानक सुक्ष्म है। चरित्र-चित्रण अथवा चरित्र विश्लेषण कलात्मक एवं चमत्कार पूर्ण है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में पात्रों के व्दारा व्यक्ति की संक्रान्त मनस्थिति को उजागर करने का स्तुत्य प्रयास किया है। इसके लिए आपने हलके बाहरी परिवेश का आश्रय कम और मानसिक परिवेश के मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन अधिक सजीव एवं सशक्त ढंग से हुआ है। कहानियों में संवाद प्राय: स्वाभाविक पात्रानुकूल स्पष्ट, सरल सुबोध संतुलितसंक्षिप्त उपयुक्त, नाटकीय एवं यथार्थ में परिपूर्ण है। सभी संवाद प्राय: पात्रोंके चरित्र एवं उनके मनोभावों

के परिचायक है वे लेखकों की पर्यवेक्षण शक्ति सांसारिक ज्ञान एवं मानव-चरित्र को समझाने की क्षमता के द्योतक है , उनमें सजीवता एवं गंभीरता विद्यमान है, वे सार गर्भित एवं सक्षम है उनमें मनोवैज्ञानिकता का पुट विद्यमान है और वे रात-दिन की बोलचाल के जीवन्त नमूने है।

जैनेन्द्रकुमारजीने समाज के यथार्थ को उजागर करते हुए मानव-मन के रहस्यों का उद्घाटन अत्यन्त सशक्त ढंगसे किया है। अपनी कहानियों में प्राय: ऐसे पात्रों का ही चयन अधिक किया है जिनकी कुंठा का मूल काम-भावना, शारीरिक हीनता, आरम्भिक परिवेश अथवा वर्तमान परिवेश के वैषम्य में विद्यमान है जो वैयक्तिक रुचियों की विभिन्नता के कारण दमन एवं मनस्ताप के शिकार हो रहे है, जिनमें पारिवारिक विघटन की पीडाओं को झेलने एवं यथार्थ से संघर्ष करने का सामर्थ्य है जो शापग्रस्त जीवन की विडम्बनाओं से परिपूर्ण है, जिनमें प्राय: मानसिक उद्वेलन, तनाव, एवं अन्तर्द्वन्द्व भरा हुआ है। कहानी की नायिकाएँ अपने अस्तित्व की स्वतंत्र माँग के लिए सभी प्रकार के कष्ट सहने को तैय्यार है, जिनमें जीवन की रिक्तता, उदासी एवं सुनेपन के कारण कुंठित एवं विघटित जीवन व्यतीत करनेपर विविश है।

जैनेन्द्रकुमार के पात्रों में सबसे अधिक मनोवैज्ञानिकता के दर्शन अधिक होते है। इसी कारण लेखकने अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के अत्याधिक वैषम्य से कुंठित पुरुष एवं मनस्तापी नारी के चरित्र की झाँकियाँ अंकित की है। काम-भाव एवं काम-ग्रंथि से पीडित चरित्रों के सजीव कुंठित एवं विघटित जीवन के चित्र अंकित किए है। शारीरिक विरूपता- जन्य हीन-ग्रन्थि एवं काम-सुख की

अतृप्ति से व्यथित एवं कुंठित चरित्रों का सजीव चित्रण किया है। शैशव और यौवन की अतृप्तियों से मनोरोग-ग्रस्त चरित्रों की विडम्बनाओं का निरूपण किया है इच्छित जीवन संगी की अप्राप्ति से उत्पन्न जिन्दगी की शून्यता एवं निरसता को व्यक्त करनेवाले पात्रों को प्रस्तुत किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी के नारी पात्रों की विशेषताएँ यह है कि कहानी की नायिकाएँ मध्यमवर्गीय समाज और मान्यताओं में पत्नी, साधारण घरेलू, कम पढ़ि-लिखी नारियाँ है। घर गृहस्थी के दायित्वों एवं पति तथा परिवार की नैतिक आस्थाओं को भी स्वीकार करने वाली है किन्तु मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना के स्तर पर उनमें एक विशिष्ट वैयक्तिक चेतना की भी चरम सीमा उपलब्ध होती है जिससे वे अनायास ही और उन्मुक्त अन्त: प्रेरणाओं से छट पटाकर रह जाती है। वे कभी-कभी एकान्त में किसी अन्जाने अप्राप्य को पाने की चाह से भर जाती है। अपने परिवार के सदस्योंका अथवा पतिका भय उन्हे जरा भी त्रास्त नहीं करता। कहानी की नायिकाएँ मनोनुकूल निश्चय करके कार्य करने वाली नारियाँ है। सामाजिक सापेक्षता, तथा नियंत्राण उन्हे मान्य नहीं तथा प्राचीन मान्यताएँ उन्हे मान्य नहीं है। जीवन कठोन रास्तोंसे गुजारने की उन्हें आदत है चाहे उसमें कितनी भी समस्याएँ क्यों न हो ? सामाजिक समस्याएँ भी इन्हे गतिशील बनाती है, और प्रेरणा देती है।

कहानी की इन मध्यवर्गीय नारियों में अपनी सामाजिक परिप्रेक्ष्यगत विस्थितियों को भोगते हुए जिस निराशा, अनास्था, वैयक्तिक कुण्ठा, आक्रोश एवं अतिवादी संकीर्ण दर्शन की परिणति

प्रदर्शित को गयी है।

जैनेन्द्रकुमार के नारी-पात्रों की सबसे बडी विशेषता यह है कि उनके सभी पात्र अपने पतिके अतिरिक्त पर-पुरुष को ओर आकर्षित होते है। इस आकर्षण का प्रमुख स्रोत फ्रायड का यौनवाद ही है। सामाजिक तथा गृहस्थ्य जोवन का असन्तोष भी इस प्रकार के चित्रण के लिए उत्तरदायी हो सकता है। परन्तु प्रधान रूपसे इसका कारण यौनाकर्षण ही है। विवाहिता होते हुए भी उनमें अपने पूर्व प्रेमी के प्रति आकर्षण रहता है। यौनाचार के कारण जैनेन्द्रकुमारजी के नारी पात्र प्रेमी के प्रति समर्पण और पतिके अत्याचार से जुझाते हुए घर-बाहर को संघर्षात्मक समस्या से जुड जाते हैं। नारी इस प्रेम को -हृदय में संजोये रहती है तथा सामाजिक दाय को स्वीकार करने में संकोच नहीं करती। त्रिकोणात्मक प्रेम को अतल गहराईयों में नारी किसी भीपुरुष को लेकर न तो डूब पाती है और न पुरुष को प्राप्त कर पाती है। इसीलिए वह पति और प्रेमी के मध्य अपनी आन्तरिक भावनाओं से जुझाती रहती है। सहती रहती है, और टुटती रहती है।

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों का हर पति अपने आप को सौभाग्यशाली मानता है कि उसे ऐसी सुयोग्य और सुन्दर पत्नी मिली, किन्तु इसके विपरीत पत्नी के द्वन्द्व का मूल यही है कि जीवन साथी उसके मनोनुकूल नहीं है। कहानियों की नारियोंमें पत्नीत्व कम, प्रेयसीत्व प्रधान है। "वह किसी पुरुष से प्रेम करती है, प्रेम की परिणति क्या होगी इसपर विचार नहीं करती लेकिन भावी घटनाएँ उसे कभी प्रेयसी बनाकर ही छोड देती हैं तो कभी पत्नी।"

जैनेन्द्रकुमारजी के नारी पात्रों की एक अन्य विशेषता है उनकी अहंवादिता। अपने परिवार से, पति से अधिक स्वकीय है। समाज के बन्धनोंसे वह नहीं डरती। वे चाहती है "उन्हे कोई समझे उनके रूप को परखे, उपके सौन्दर्य की कोई प्रशंसा करे और उनके प्रेम पाश में अबध्द हो जाए।" इस के मूल में काम-वासना की मूल प्रवृत्ति सहाय्यक होती है। इसीलिए "जैनेन्द्रकुमार की नारियों में विभिन्न ग्रन्थियों से परिपोषित मानसिकता के साथ उनकी अंहता उनेके निरन्तर स्वपीड़न की स्थिति तक ले जाती है।

जैनेन्द्रकुमार के नारी पात्र वैयक्तिकता के धरातल पर इतने गहरे पैठे हैं कि सामाजिकता कहींभी उन्हे आबध्द नहीं करती। उनके कहानियों में यौनेच्छा के उदीप्त चित्र तो उपलब्ध है पर नारी के उस स्वरूप का स्वतंत्र अभाव है जो माता है, वह जननी है। उसके कुछ कहानियों की नायिकाएँ सिर्फ नारी है, भोग्या है, पत्नी है, प्रेयसी है और भी कुछ है पर मातृत्वपूर्ण नारी उनमें कहीं भी नही है।

जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ दस भागों में विभाजित की गयी है। पहले भाग में ग्यारह कहानियाँ संकलित है। फाँसी, गदर के बाद, निर्गम, एक कैदी स्पर्धा, जनार्दन की रानी, जयसन्धि राह में नई व्यवस्था, रानी महामाया, तथा जनता आदि कहानियों का समावेश हुआ है।

"फाँसी" कहानी में लेखकने दो नारीयों की अलग-अलग विशेषताएँ बतानेकी कोशिश की है। कहानी के नायक की माँ अपनी जान बचाने के लिए अपने बच्चे को जंगल में छोड देती है, तो उसी कहानी में दुसरी स्त्री अपना बच्चा न होते हुए भी बच्चे का स्वीकार

करते हुए जंगल में मिले बच्चे को गोद लेती है।

फाँसी कहानी का नायक शमशेर डकैती करता है। मिला हुआ धान गरीब लोगो में बाँटता है इस कारण उसे फाँसी होनेवाली है। पुलिस अफसर की लडकी जुली रेबेका सब जानकर भी शमशेर को बचाना चाहती है। अपना प्यार बताकर उसे बचने के लिए मजबूर करती है। शमशेर को फाँसी होनेपर खान-पान छोडकर अपना जीवन रोते हुए गुजारती है। शमशेर डकैती करता है लेकिन मिला हुआ धान गरीबो में बाँटता है इसीकारण जुली रेबेका के मन में गरीबों के और शमशेर के प्रति प्रेम उमड आता है।

"गदर के बाद" कहानी की अंग्रेजी युवती अपने बच्चे की हत्या का बदला ले लेती है लेकिन निरपराधों की हत्या होने के कारण स्वयं प्रायश्चित भुगतती है।

इस संग्रह की कहानियों के अलग-अलग विषय होते हुए भी स्वतन्त्रता पूर्व का भारत की झाँकी इस में मिलती है। इन्ही कहानियों में से पाँच कहानियाँ देश के क्रांतिकारी युवकों को प्रेरणा देने के उद्देश्यसे लिखी गयी थी।

"निर्मम" कहानी की नायिका पुरुषों के कपडे पहनकर फौज में भरती हो जाती है और एक दिन शहीद हो जाती है। औरों की जान बचाने की खातीर स्वयं धोका मोल लेती है। अपने वतन के लिए महाराज के लिए अपनी जान कुर्बान करती है।

"स्पर्द्धा" कहानी की मैरिष एक सुंदर युवती है, एक कलाकार है, प्रेम में धोखा होनेसे क्रांतिदल में शामील हो जाती है। मैरिष

अपने देश के लिए अपने प्रेम को कुर्बानी करती है। देश के प्रति उसके मन में स्नेह तथा आदर है। यह उसकी विशेषता है।

"जनार्दन की रानी" कहानी में लेखकने यह बताया है कि पति न होने के कारण नारी कितनी अकेली रह जाती है फिर भी समय के साथ समझोता करके मुसीबतों के साथ सामना करने की हिम्मत रखती है।

"जयसन्धि" कहानी की नायिका अपने पति से प्रियकर को अधिक चाहती है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने प्रेम और विवाह प्रति नवीन दृष्टिकोन प्रस्तुत हुआ है। प्रेम की परिणति विवाह में नहीं होनी चाहिए। यशोविजय की प्रेमिका यशसिलका विवाहोपरान्त भी अपने पूर्व प्रेमी के लिए इस सीमातक समर्पित है कि पती कि बलि देने में भी उसे संकोच नहीं है।

"राह में" इस कहानी में अधेड उम्र की एक अंग्रेज महिला है लेखकने इसके माध्यमसे अपनी विश्वबंधुत्व की भावना को उजागर करती है, तथा जातिवाद का विरोध कर अखण्ड मानवता को एक सूत्र में बांधने का संदेश देती है।

अन्य नारी पात्रों के समान "रानी महामाया" कहानी में महामाया भी अभुक्त कामेच्छा से आक्रान्त है, क्योंकि राजा वैभजन्त यौवनावस्था में ही उसे छोडकर चला जाता है। लेखकने इस कहानी में आदर्श शासक के दायित्वोंपर प्रकाश डाला गया है।

"जनता" कहानी में समाज मनोविज्ञान का अनूठा उदाहरण

देखने मिलता है। युवती का साधु के साथ घूमना चाहे वह उसकी लडकी हो या अन्य रिश्तेदार परंतु समाज अलग नजर से ही देखेगा यही बात प्रस्तुत कहानी में मिलती है।

दूसरा भाग इस संग्रह की कहानियों की रचना बाल-मनोविज्ञान के आधार पर हुई है। बालकों का स्वभाव तथा परिस्थितिसे पीडित होने के कारण उनके माता-पिता का स्वभाव तथा बच्चोंका स्वभाव मिल जुल नही पाता और दोनों में समस्या खडी हो जाती है। इसी प्रकार की समस्याओं को लेकर इस संग्रह की कहानियों में प्रस्तुत की गई है।

इस संग्रहमें अनन्तर, इनाम, पाजेब, आत्म शिक्षण, फोटो-ग्राफी, खेल, किस का रूपया, चोर, अपना-अपना भाग्य, तमाशा, दिल्ली में जनता में, दो चिड़ियाँ, पढ़ाई, राज-पथिक, अपना पराया, बिल्ली बच्चा, रामू की दादी, आदि कहानियों को समाहित किया गया है।

"अनन्तर" से जीवन के प्रति लेखक का दृष्टिकोन प्रस्तुत हुआ है। जीवन जीना यद्यपि जीवन काटना ही है और फिर भी इसकी गति साँसो की गति के साथ चलती रहती है। निकट तम सम्बन्धियों की भी मृत्यू हो जाती है, फिर भी यह गति रूकती नही है।"

"इनाम" इस कहानी में कुण्ठाग्रस्त तथा अत्याचारसे पीडित होने के कारण अपने बच्चे के साथ भी ठीक व्यवहार न करनेवाले नारी का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

" पाजेब " कहानी में बालकों की मानसिक यातनाओं की कहानी है। माता-पिता के बालक के स्वभाव को नही समझ पातें है। और पाजेब चोरी का इल्जाम बालकपर लगा देता है। लेकिन पाजेब बालकने चोरी ही नहीं थी.। जबरदस्ती उसपर इल्जाम लगाने के कारण वह कुछ बोल भी नही सकता। परंतु मन ही मन वह मानसिक यातनाओंका शिकार हो जाता है।

"आत्मशिक्षण" कहानी में बालक रामचरण के माता-पिता उसे समझाने में असमर्थ है, माता-पिता होते हुए भी बालक रामचरण की व्यथा और तनाव बढता है। बाल्यावस्थाके मनोवृत्तियों का चित्रण प्रस्तुत कहानी में प्रतीत होता है।

"फोटोग्राफी" में पति और पुत्र दोनों को खो देने के पश्चात, आत्महत्या की ओर उद्यत होती हुई नारी की विवशता के बहाने नियतिवाद पर प्रकाश डाला गया है। फोटोग्राफर की आर्थिक विवशता और श्याम की माँ की आत्म व्यथा कहानी को मार्मिक बनाने में ही सहायोग देती है। इस तरह पूरी कहानी में भावुक कल्पना का जो रंग पैदा होता है।""

"खेल" जैनेन्द्रकुमार की सर्व प्रथम कहानी है , जिसके प्रेरणा स्त्रोतों के विषय में स्वयं उन्होंने लिखा है , "विशाल भारत में" अपनालेख पढने की बात सन १९२८-२९ की होगी। वह चीज बच्चों का खेल ही था।"

"किसका रूपया " नामक कहानी में गरीबी के कारण एक मुसलमान लड़की की हालात के बारे में बताया गया है। रूपया खो जाने पर उसके मन में संघर्ष हो जाता है। भय प्रवृत्तिका निवास उस लडकी के मन बैठ जाता है।

"चोर" कहानी में आठ वर्षीय बालक प्रद्युम्न बड़ा उधमी है। बालक को चोर के प्रतिभय और जिज्ञासा की वृत्तियों को दर्शाया गया है। बालक को जो भी जिज्ञासा होती है उस के प्रति उसको उसे खोलकर बताना चाहिए। उसके हर समस्या को समझाना चाहिए, उसे दबाना नहीं चाहिए परंतु कहानी की नायिका यह सभी कुछ नहीं करती।

"तमाशा" कहानी में डॉक्टर की भूल के कारण माता पिता सदा के लिए बच्चे को खो देते है। इसी वेदना का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है।

"दिल्ली में" सामाजिक रीति रिवाज तथा समाज के अलिखित नियमों में थोडासा भी बदलाव आ गया तो अनर्थ हो जाता है। समाज में अगर कोई लडकी विवाह के पहले माँ बनना कितना अभिशाप बन जाता है। इस कारण कहानी में नायिका करुणा, धार्मिक तथा सामाजिक मुल्यों की शिकार है।

"दो चिड़ियाँ" कहानी में पुरुष और नारी के आकर्षण तथा प्रेम को ही दर्शाया गया है। प्रिय के पास पुन: लौटने के की आशा के कारण तथा उससे संयोग की इच्छा के कारण चिड़िया अपनी माँ को छोडकर अपने प्रेमी के पास हो आती है। उसकी माँ भी भावाकुल होकर अपने मृत पति के वियोग में अपने प्राणों का विसर्जन करती है।

"पढाई" में सुनयना की माँ के अन्तर्द्वन्द का मार्मिक चित्रण है जो अपनी बेटी को रोती हुई नहीं देख सकती तथा सामाजिक मान्यता के भय से उसे पढानी भी उचीत समझती है।

"राज-पथिक" कहानी का नायक राजकुमार भावुकता, निष्ठा एवं चरित्रिक आदर्श का प्रतीक है। सात समुद्रपार रहनेवाली नीलम देश की राजकन्या और उसका महल जानने के लिए राजकुमार की जिज्ञासा उसे विव्हल करती रहती है। राजकन्या और राजकुमार के मिलन को ब्रह्म और आत्मा का मिलन बताया है।

"अपना पराया" नामक कहानी में फौजी स्वार्थ भावनासे भरा हुआ है। अपनी ही स्त्री और पुत्र को पराया समझकर वह रात्रि के समय कडकडाती सर्दी में उन्हे बाहर निकालने के लिए आतुर हो जाता है, परन्तु अन्त में जब उसे मालूम होता है कि वह उसी की पत्नी एवं उसी का बेटा है तो उसमें यकायक परिवर्तन हो जाता है। उसमें अपनत्व की भावना उत्पन्न हो जाती है।

"बिल्ली-बच्चा" कहानी में लेखकने यह प्रतिपादीत करने की कोशिश की है कि, शरबती में मातृत्व की भावना बाल्यावस्था से ही उत्पन्न हो जाती है। तीन वर्ष की आयुमें ही वह माँ के समान व्यवहार करती है।

"रामु की दादी" इस कहानी में बालक की सुकोमल भावनाओं का मार्मिक चित्रण है। माता-पिता होने के बावजूद भी दादी और नौकरसे प्रेम भाव प्राप्त करता है।

तीसरा भाग - इस भाग की कहानियाँ लोककथाओं की भाँति रोचक होने के साथ-साथ जीवन की सच्चाईयों और समस्याओं पर प्रकाश डालती है। जीवन के सत्यों का उद्घाटन देवी-देवता, पशु, पक्षी, पेड पौधों के माध्यमसे हुआ है।

"देवी देवता" इस कहानी में आधुनिक विवाह व्यवस्था और विवाह के रिती-रिवाजों के प्रति हास्य, व्यंग पूर्ण दृष्टिकोण से विचार किया गया है। अलग अलग प्रतिको को लेकर सांसारिक समस्या ओं को देवी देवता के प्रतीक रूप में अंकित किया गया है।

"एक दिन" कहानी में वर्तमान काल में अतृप्त कामेच्छा, आर्थिक स्थिती के पहले से भी अधिक दयनिय होने अथवा किन्ही सामाजिक परिस्थितियों के कारण पात्र विगत घटनाओं का पुनरव-लोकन करते है।"

"चिडियों की बच्चो" में उपदेशात्मकता का स्वर विद्यमान है। चिड़िया भोले, निरोह एवं साधनहीन गरीब व्यक्तियों की प्रतीक है जिसे माधावदास जैसे गर्वीले एवं धनाढ्य व्यक्ति अपनी इच्छा पूर्ति का साधन बनाते है। ..... यह आज के युग की एक ज्वलन्त समस्या है, जिससे मुक्ति पाने के लिए कथाकार ने "चिड़िया की बच्ची" के प्रतिकात्मक रूप में यह व्यंजित किया है कि जब तक साधनहीन एवं गरीब व्यक्ति स्वयं सतत प्रयत्नशील एवं जागरूक नहीं रहेंगे, तब तक वे धनी, व्यक्ती के षड़यन्त्र से मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।"

"भाद्रबाहू" कहानी में मनुष्यने अपनी वासनाओं पर काबू पाना चाहिए। तभी उसे अपनी तपश्चर्या का फल मिल सकता है। देव-देवता भी उस से डरने लगते है।

"गुरु कात्यायन" कहानी में शिवपार्वती की पौराणिक कथा का विषय व्यक्त किया है।

"अनबन" कहानी में बुध्दि अहं भावसे पीडित है। उसमें स्वार्थ-भावना का प्राधान्य है। उसके चरित्र में उद्दण्डता एव उग्रता है। अपने पद को और अधिक शक्ति-शाली बनाने के लिए वह दूसरे को निन्दा करती है। इसी बात को लेकर स्पष्ट किया है। "

"निलम देश को राजकन्या" प्रेमातुरी सुन्दरी राजकुमारी की कहानी है जो राजकुमार की प्रतीक्षा में चिरलीन रहती है। प्रसिध्द विचारक स्वर्ण किरण का कथन है कि "राजकुमारी के मन में एक ग्रन्थि है प्रेमजन्य प्रतीक्षा की ग्रन्थि राजकुमारसे मिलन की ग्रन्थि जिसकी ओर कहानीकार हमारा ध्यान आकृष्ट करता है।"

जगदीश पाण्डेय के अनुसार "नीलम देश की राजकन्या जैनेन्द्रजी के मिथ्याकल्प का अन्यतम उदाहरण है।" वास्तव में लेखक ने जीवात्मा और ब्रहम कामीलन ही व्यंजित किया है। जीवात्मा ब्रहमसे एकाकार होने के लिए सदैव आतुर और उद्विग्न रहती है। राजकन्या के माध्यमसे यहीं भाव व्यंजित होता है।"

चौथा भाग "इस भाग की कहानियोंमें जैनेन्द्रकुमारने सामाजिक सम्बन्धो पर प्रकाश डालते हुए स्त्री-पुरूष की प्रेम और विवाह-सम्बन्धी समस्याओं का उद्घाटन किया है। उनके अपन्यासों के समान इन कहानियों मे भी त्रिकोण - पति-पत्नी-प्रेमी प्रस्तुत किया है, जो उनकी निजी धारणाओं और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है। जैनेन्द्रने स्त्री-पुरूष के प्रेम और विवाहपरक सामाजिक सम्बन्धो का एक उदात मानवीय सूक्ष्म दृष्टि से देखा है और उसके यथार्थ सत्यतक पहूँचकर जीवन के सतही सम्बन्धों के मिथ्या

तत्त्व को झकझोरा है।"

"मास्टरजी" कहानी में लेखकने घर की समस्या को ही प्रस्तुत किया है। इस कहानी की नायिका श्यामकला अपने पति के प्रेम से ऊब गई है। वह पहाडी नौकर के साथ भाग जाती है, और दुबारा पति के पास वापस आती है।

"घुंघरू" कहानी में भी कहानी की नायिका पति के मित्र के साथा भाग जाती है। उसे केवल पति का प्रेम ही नहीं तिरस्कार चाहिए। इसी कहानी में भी पति के प्रेम से ऊब गयी है।

"रेल में" कहानी में एक चारित्र्यहीन स्त्री की नग्नता प्रकट हुई है। वह स्त्री विवाहीत होने पर भी हर पुरूष को ही अपना प्रेमी के रूप में स्वीकार कर ली है। उसके पति को यह बात मालूम होते हुए भी वह चुपचाप है । इसी कहानी में भारत के बेरोजगारी की ओर संकेत किया गया है। श्रम को महत्व होने के कारण ग्रामीण युवक शहर की ओर आने लगे है।

"सम्बोधन" कहानी में शंकर अपनी पत्नी और प्रेमिका को समान रूपसे चाहता है। वह न पत्नी को छोडना चाहता है, न प्रेमिका को ही। वह कर्तव्य मार्ग से डिगना भी नहीं चाहता और डिगे बिना भी कैसे रहें।" वह चाहता हेक कि कोई उसे बचाये। वह चाहता है कि क्यों उसकी पत्नी ही उसके लिए सबकुछ न हो रहे, जैसे कि वह सब कुछ हो रहने योग्य है।

"ग्रामाफोन का रिकार्ड" कहानी में पत्नि शारीरिक सामीप्य औरपति का प्रेम चाहती है। लेकिन पति अपने कार्य में इतना व्यस्त है कि, अपनी पत्निको ओर ध्यान नही देता। प्रेम के तलाश में पत्नि अपने पति से अलग होना चाहती है।

"जान्हवी" नामक कहानी में जान्हवी अपने प्रिय के प्रति आकृष्ट तो है पर सामाजिक प्रथा रीती रिवाज तथा मान्यताओं का वह विरोध नहीं कर सकती। जान्हवी कहती है अगर दूसरे पुरुष के साथ अगर विवाह होने ही वाला है तो वे जिसे चाहती है उसके साथ क्यों नही ? इसी कारण दोनो अविवाहित रहने का व्रत लेते है।

"दृष्टिदोष" में भी लेखकने प्रेम की परिणति विवाह में स्विकार नहीं की है। दृष्टिदोष रूपक के रूप में प्रस्तुत हुआ है। वास्तव में प्रेमिका विवाहोपरान्त भी प्रेमी से मिलने के लिए आतुर है।" डॉ. देवराज उपाध्याय के शब्दोमें "दृष्टीदोष नामक कहानी में ऐसी नारी की कथा है, जिसको आरम्भ में किसी तरह का रोग तो नहीं है और यदि है भी तो हिस्टोरिक दृष्टीदोष है, क्योंकि इसके कारण सुभद्रा को उस नेत्र विशेषज्ञ के सामीप्य का अवसर मिलता है जो कभी उसका प्रेमी रहा है और जिस की प्रणय-याचना को मन ही मन दबाकर वह जीवन मे रम गयी थी। आज भी उसका नैतिक अहं इस बात पर विश्वास करने के लिए उसके हृदय में कोई कोमल स्थान है।"

"विस्मृति" में प्रेम और विवाह, के बारे में जो चलते आये झूटे आदर्शोंपर व्यंग्य किया गया है। विवाह के बाद पत्नि की ओर आसक्त होकर माँ को केवल काम करने की मशीन समझता है।

"पूर्ववृत" प्रस्तुत कहानी में प्रेम की महता प्रतिपादित की है। प्रेम में एक अलौकिक शक्ति है, और इसी कारण इसमें समर्पण भी महान है। विवाह केवल सामाजिक आदर्श है। इसी कारण विषय को लेखक प्रस्तुत किया है।

"परावर्तन" नामक कहानी में एक ओर जहाँ मालती और शीला आदर्श गृहिणी है और उनके चरित्र में स्वच्छता एवं निष्कपटता है वहाँ दूसरी और मंजुला के व्यक्तीत्व में छल है, कपट है और स्वार्थ है। वह कृपादयाल से विवाह करवा कर उसके साथ विश्वासघात करती है। उससे रूपये भी ऐठं लेती है। और अपने अन्य प्रेमियों से उसकी पिटाई भी करवा देती है।" "मंजुला और उसके दो साथियों ने इसपर वार किया। मारने की दशा होती तो मार सकत थे, पर जख्म करके उन्हे वहीं घर पहुँचा दिया।"

"निस्तार" प्रस्तुत कहानी में महावीर प्रसाद की लडकी पुष्पा अपने प्रेमी से शारिरीक सम्बन्ध प्रस्थापित कर के गर्भवती होती है। महावीर प्रसाद के मित्र माता प्रसाद ऐसी हालात में भी बेटी को पुत्र-वधू बनाना चाहते है। कहानी में लेखकने इसी समस्या को उदार दृष्टिकोन से प्रस्तुत किया है।

"ब्याह" कहानी में विवाह के विषय में नयी धारणा प्रस्तुत हुई है। अर्थिक स्थिती तथा संयुक्त परिवार आदि विषयोंपर प्रकाश डाला है। सामाजिक मान मर्यादाओं को दूर रखा गया है।

"भाभी" कहानी में भाभी और देवर के प्रेम को सामाजिक स्विकृति प्राप्त नही होती। इस कहानीमें सामाजिक मानदण्डो

को चुनौती दी गयी है। प्रस्तुत कहानी में निय और उसको माँ जीने के लिए ही अपना गाँव तक छोड देते है।

पाँचवाँ संग्रह : इस भाग को कहानियों में प्रेमका बौध्दिक और व्यापक दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। इस भाग को कहानियाँ हमारे जीवन में आनेवाली समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। "तथा गहनतम सत्यों का उद्घाटन करती है। "उनके प्रेम का आधार आत्मा है जो सबमें - स्त्री पुरुष में भी सम्बन्धी के यथातथ्य रूपों के अन्तस्तल में यथार्थ रूप से धडकती रहती है। जैनेन्द्रको प्रेम कहानियों में इसीलिए स्त्री पुरुष के परस्पर आकर्षण की जो मूल भावन है, वह केवल सेक्स" सम्बन्धी नहीं, बल्कि आत्मिक गहराई को यथार्थता की द्योतक है। उसमें एक उदात्त मानवोय सत्य को प्रतिध्वनि होती है।"

"परदेशी" यह कहानी प्रश्नोत्तर शैली में लिखित कहानी है। प्रस्तुत कहानी में लेखकने यह स्पष्ट किया है कि प्रेम पावनता वियोग में ही होती है। परदेसी तथा महिला के क्षणिक प्रेम को व्यक्त करके लेखकने प्रेम के उदात्त स्वरूप को ही व्यक्त किया है।

"एक रात" कहानी में लेखक का प्रेम के विषय में उदार दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। "कहानी में जयराज व्यापक के चलते घुट रहा है और सुदर्शना अनन्यता के चलते। दोनों स्वधर्म से पीडित और स्वभावधर्म से प्रेरित है। सुदर्शना का पति शराबी है, ऐबी है पर पत्नी से बेहद प्रेम करता है। दूसरी ओर सुदर्शना, दुराचरिणी, है, पापिष्ठा है, पतिव्रता नहीं है। इन्ही परिस्थितीयों के परिणाम स्वरूप दोनों की मन:स्थिति घुटनमय हो गई है। उसी घुटनमय मन:स्थितीको दूर करने तथा पति के स्वभाव में परिवर्तन लाने के लिए

वह जयराज के साथ भाग जाती है।"

"नादिरा" कहानी में लेखकने करुण तथा पीड़ित नारी का चित्रण किया है, जो हालात से पीड़ित होने के कारण क्रूर अत्याचार को सहन करने के लिये विवश है। "नादिरा" कहानी की नायिका नादिराभी हिरनी की तरह मासूम और चट्टान की तरह सहन करनेवाली है। दो बूँद आँसू के सिवा उसकी आँखों में कहीं भी रोष, प्रतिशोध या अपेक्षा का भाव दिखाई नहीं देता। उसका चाचा उसमें वेश्या-वृत्ति उपजाकर उससे धन कमाना चाहता है। लेखक उसके प्रति दयार्द्रता, करुणा अभिव्यक्त करता हुआ है। "मैं नहीं जानता हूँ कि नादिरा को कभी किसी ने स्त्री बनने का अवसर दिया कि नहीं। सोचता हूँ कि क्या उसका मातृत्व अपनी सार्थकता के लिए गोद में मनुज-शिशु भी कभी पायेगा या वह सम्पूर्ण भाव से बकरी जैसे प्राणियों के प्रति ही विसर्जित होता रहेगा।"

"रत्नप्रभा" कहानी में बुढे सेठ की जवान पत्नी की दमित प्रणय और काम वासना की प्रस्तुत किया है। पत्नी यौवना होने के कारण उस के मन में भितरी तड़प है तथा शारिरीक भूख होने के कारण बैरागी के प्रति आकर्षण है।" प्रस्तुत कहानीमें लेखकने अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को ओर भी संकेत किया है।

"ध्रुवयात्रा" कहानी में लेखकने पवित्र प्रेम की दिव्यता व्यक्त की है, जहाँ प्रेमिका पति का संयोग नहीं चाहती। पति का सपनाही उसके जीवन में महान है। पति के स्वप्न की ध्रुवपूर्णता की ही वह आकांक्षा वह करती है।" प्रस्तुत कहानी में विवाह को प्राथमिकता नहीं देती।

"बोडटि्स" कहानी में लार्ड को बेटी बोडटिस की कथा है, जो नर्स बनकर सम्पूर्ण मानवता से प्रेम करती है। बोडटिस कहानी में मेंजर मनसा अधिक रुग्ण है। वह एक प्रकार से जड़ ही गया है। गतिशीलता उसके जीवनसे पूर्णत: निकल चुकी है। शरीर में सुई चुभाने पर भी उसे पीड़ा अनुभव नहीं होती। अन्त में अस्पताल की एक परिचारिका अपने स्नेह की तरलता और आर्द्रता से उसे रोग मुक्त करती है और नया जीवन प्रदान करती है।"

"प्रतिभा" प्रस्तुत कहानी में लेखकने अकेलेपन को भोगनेवाली नारी की करूण कथा का चित्रण मिलता है। कहानी में नायिका दुसरोंका भला चाहती है। दुसरों को आनन्द देती है लेकिन मन ही मन ईश्वर से कोसती है, पुछती है। हे ईश्वर तू मेरा अंधकार कब दूर करेगा ?"

"मीठी खीझ" कहानी में प्रेमी और प्रेमिका के एक दुसरे के प्रति प्रेम का वर्णन है। विमल और ज्योत्सना के मन में एक-दूसरे प्रति उनका प्रेम सहज एवं स्वाभाविक है। घृणा और तिरस्कार से उनका प्रेम बढ जाता है।

"अन्धो का भेद" यह एक नारी की कहानी है जो हालात से परेशान हो कर अपने पति को आँखे फोड देती है और स्वयं वेश्या बन जाती है। अन्त में उसे यह अहसास होता है कि पति का तिरस्कार पाप है और वह अपने पापपूर्ण कृत्योंपर प्रायश्चित करती है।

छटा भाग : इस संग्रह की कहानियाँ लेखकके निजी अनुभवों पर आधारित होने के कारण जीवन की विविध समस्याओं को नवीन पध्दती में प्रस्तुत करती है।

इन कहानियों में कहानीकार का विशेष कौशल का भी परिचय मिलता है। इस संग्रह में साधु की हट, एक टाइप, इक्के में पानवाला, वह अनुभाव, कहानीकार, मित्र विद्याधर प्रियव्रत, आतिथ्य क:पन्या, आम का पेड, चोरी, सजा, हत्या, तथा गंवार कहानियाँ संकलित है।

"साधु की हट" के माध्यमसे लेखकने भारतीय संस्कृति अंधविश्वास आदि बातों को स्नेह से ही जित सकते है, यह बात लेखकने बतायी है।

प्रस्तुत कहानी में दरोगा की पत्नी चाहती है कि उसका पति सब बातों को विस्मृत करके उसके पास शांति तथा क्षमा याचना के लिए आए, पर वह नहीं आता। पति-पत्नि का सम्बन्ध होने के कारण उसकी सभी इच्छाएं आशा-आकांक्षाएं उसके अन्तर्जगत् में जाकर बैठ जाती है। इन्ही बातों को लेकर लेखकने बताया है।

"इक्के में" कहानी में लेखकने घटनाओं को महत्व दिया है। किसी एक घटना का आधार लेकर इसकी रची की गयी है।

"पानवाला" कहानी में पानवाले की पत्नी वेश्या बनकर अन्य पुरुष के साथ भागती है तब भी वह उसी को चाहता है। जीवन भर उसे ढूँढता फिरता है, जीवन में जितना भी धन कमाता उतना उसी की खोज में गुमाता फिरता है।

"मित्र विद्याधर" कहानी में प्रेम की दिव्यता, मिलन में नही तो समर्पण और त्याग में ही है। इसी विषय को लेखकने स्पष्ट किया है।

"चोरी" कहानी का नायक लक्खू है। लक्खू की आर्थिक स्थिती अत्यन्त शोचनीय है। महाजन के दुर्व्यवहार के कारण उसे चोरी, जैसे अपराधपूर्ण कार्य को करनें में पूर्णत: असमर्थ हो जाता है। लक्खू का घर नीलाम हो जाता है। उसकी बहू, तीन बच्चे, बुढी माँ, और अनाथ विधवा भाभी सभी रास्ते पर आ जाते है। बच्चों को तथा परिवार के सदस्याकें के लिए खाने कि लिए कुछ नही जुटा पाता तब उसे विवश होकर चोरी करनी पडती है।

"सजा" कहानी मैं मिसरानी आर्थिक वैषम्य के कारण चोरी करने के के लिए विवश होती है। चोरी के अपराध में पकडी जाती है। अपने पुत्र की पढाई के लिए वह मालकिनके रूपये चुरा लेती है। इस कहानी में लेखकने यह दर्शाया है कि नारी ही नारी के प्रति कठोर तथा घृणास्पद व्यवहार करती है।

"गवार" कहानी मैं ग्रामीण व्यक्ति एक आदर्श पात्र है, जो समाज के रूढिगत सामाजिक मान्यताओं का विरोध करे के पुनिया को अपने घर ले आता है जो विधवा है। उसे अपने घर में लाकर रखता है। जिसमें एक पुत्र भी होता है। पर उसकी मृत्यू हो जाती है

सातवाँ भाग : इस संग्रह की अधिकांश कहानीयाँ प्रेम और विवाह सम्बन्धी समस्याओंसे जुड़ी हुई है। इन कहानियों की विशिष्टता पात्रों के चारित्रिक वैशिष्ट्य में समायी गयी है। कहानी के पात्रों की मनोभावनाओं का चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार है।

"टक राइट" यह कहानी एकांकी के रूप में लिखी गयी है। प्रस्तुत कहानी में प्रेम और विवाह सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है।

"राजीव और भाभी" इस कहानी में लेखकन पुराने मूल्यों रिती रिवाजों को चुनौती दी गई है। समाजव्दारा अस्वीकृत देवर भाभी के सम्बन्धों को लेकर कहानी लिखी गई है।

"कुछ उलझन" कहानी में प्रेम में त्याग करना ही सच्चा प्रेम है, विवाह में नहीं। श्याम और उसकी पत्नी दोनों एक-दूसरे को गलत समझते रहते है। इसीलिए अपने मन की व्दन्दपूर्ण स्थिति को दूर करने के लिए दोनों सदानंद का आश्रय लेते है जो श्याम का पुराना मित्र है।

"दर्शन की चाह" में कहानी का नायक अपने दायित्व को भी भुला देता है और नायिका गुस्से के मारे आत्महत्या का मार्ग अपना लेती है। प्रस्तुत कहानी में लेखकने भोग और समन्वयपर बल दिया है।

"रुकिया बुढिया" नामक कहानी में रुक्मिणी अत्यन्त सरल एवं सीधी औरत है। पति के दुर्व्यवहार करने पर उसके मन में व्यथा एवं व्दन्द रहने लगता है। जब उसका पति उसे छोडकर चम्पी के साथ भाग जाता है तब वह शीघ्र ही रुक्मिणी से सु रुकिया बुढिया बन जाती है। पति व्दारा तिरस्कृत, परित्यक्त होनेपर भी वह अन्य पुरुष से सम्बन्ध प्रस्तापित नहीं करती।

"तिरबेनी" कहानी की नायिका विवाहोपरान्त पूर्व प्रेमी को न भुलाने के कारण पति से असन्तुष्ट रहती है। मानसिक स्थिति

संघर्षपूर्ण होने के कारण वह अपने इकलौते बेटे के साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं करपाती, उसे धिक्कारती रहती है, पीटती रहती है है।

"आलोचना" कहानी में यह बताया है कि व्यक्ति की कुण्ठा व्यक्ति के जीवन में आनेवाले सभी व्यक्ति हो सकते है। जिनके कारण व्यक्ति कुण्ठाग्रस्त बन जाता है।

"क्या हो" कहानी में विधवा समस्याको अलग ढंग से देखा गया है। जो राष्ट्रहित के लिए अपनी जान कुर्बान करते है उसकी पत्नी को विधवा मानना नहीं चाहिए ऐसा लेखक कहना चाहते है और उसी स्त्री का विवाह होना जरूरी है इस विषयपर लेखक जोर दिया है।

"चालीस रूपये" कहानी में एक ऐसी स्त्री की अवतरणा की गई है जो व्यभिचारिणी है और झूँठ बोलकर वागीश के मन को हरना चाहती है। लेखकने इस कहानी में बिना मेहनत किये रोटी खाते है उसपर व्यंग्य किया है।

"प्यार का तर्क" कहानी में लेखकने विवाह और प्रेम को अलग दृष्टिकोण से देखा है। सच्चा प्रेम त्याग में ही है मिलन में नहीं है। जहाँ प्रेम हो गया हो वहाँ विवाह भी श्रेयस्कर नहीं है।

"वह चेहरा" कहानी में रानी की कुण्ठा का कारण पारस्पारिक गृह कलह में है। लेखकने इस कहानी में यह बताया है कि पुरूष के मन में नारी के प्रति आकर्षण केवल चेहरे के कारणही उत्पन्न होता है।

आठवाँ भाग : इस भाग की कहानियों में जैनेन्द्रजीने वैविध्य की दृष्टि से पात्र, कथा, चरित्र चित्रण का उद्घाटन और विश्लेषण अति सुक्षमतासे किया है। इस संग्रह में चलितचित्र ये पत्र मान रक्षा, कहानी की कहानी, एक पन्द्रह मिन्ट, स्वीकार, क्रांतिकर्म अभागेलोग वह क्षण सहयोग, वह सुफी, कहानी, प्रमिला, प्रणयदंश विराग, निराकरण, प्रत्यावर्तन आर्वत, मौत और पत्नी, माया भाभी आदि कहानियाँ संकलित है।

"मानरक्षा" कहानी में नारी के अर्थिक स्वतंत्रता का विरोध किया गया है। विवाह के बाद नारी नौकरी करें यह लेखक के विचारोंमें ठिक नहीं है।

"एक पन्द्रह मिनट" में विवाह के बारे में लेखकने अपने विचार व्यक्त किये है। विवाह संबन्धी सत्थो को प्रस्तुत किया है।

"अभागे लोग" जो निम्न वर्ग केलोग है उनके हालात के बारे में प्रस्तुत कहानी है। निम्न वर्ग के लोग भाग्य के प्रति कितना विश्वास रखते है यह इस कहानी में बताया है।

"सहयोग" में प्रेम और विवाह के सम्बन्धोपर प्रकाश डाला है। प्रेम की परिणिती विवाह में नही बल्कि त्याग में है। जो पति व्दारा नये सम्बन्ध प्रस्तापित करती रहती है पर भी विरोध नहीं करती और पति के आश्रय तथा आर्थिक सहाय्यता की अपेक्षा करती है।

"कहानी" प्रेम और विवाह समस्या को उजागर करती है। कहानी में सुरेश की प्रेमिका धन के लालच में अन्य पुरुष से विवाह कर लेती है।

"प्रमिला" कहानी में प्रमिला उर्मिला के पतिसे प्रेम करती है। किन्तु दुर्भाग्यवश वह उर्मिला के विवाह के उपरान्त अपने प्रेमी से मिल नही पाती, फलस्वरूप कुण्ठा की आग में जलती रहती है।

"प्रणायदंश" प्रस्तुत कहानी में प्रेम की दिव्यताका उद्घाटन करते हुए विवाह का विरोध किया गया है। प्रेम शारिरीक सम्बन्धोंमें परिवर्तित नहीं होना चाहिए।

"विराग" कहानी में गृहस्थ जीवन को ही श्रेष्ठ माना गया है। अपनी पत्नी, बच्चो को त्याग करना उचित नही माना है। इस कहानी में गृहस्थ जीवन को प्रस्तुत किया है।

"निराकरण" कहानी में पती-पत्नी के सुख दुखों को प्रस्तुत किया है। पती पत्नी एक दुसरे से दूर रहकर सुखसे रह नहीं सकते दोनो एक दुसरे के पास हो तो ही सुख में रह सकते है।

"प्रत्यावर्तन" पति पत्नी के विचारों में असमानता हो तो घर में व्दन्द उत्पन्न होता है। इसी विषय को कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

"पत्नी" कहानी में पति-पत्नी एक दुसरे को समझाने में असमर्थ है। पति कालिन्दीचरण भारतमाता की स्वतन्त्रता को प्राप्ति के बारे में अपने मित्रोंसे बहस करते रहते है। उनके साथ मिलकर खाना खाते है, चाय पीते है पर पत्नीसे पूछते तक नहीं। उन्होंने अपने पत्नी को समझाने की कभी कोशिश नहीं की।

"भाभाभाभी" आर्थिक विवशता से पीड़ित नारी की शोचनीय स्थिति को प्रस्तुत है और सच्ची मित्रता के महत्त्वपर प्रकाश डालती है।

नवाँ भाग : इस संग्रह की कहानियाँ जीवनमें आनेवाली समस्याओं का उद्घाटन करती है, साथ-साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है। इस भाग में प्रण और परिणाम, वहरानी अमिया तुम चुप क्योंकहो गई ? मृत्युदण्ड, भिखारी कहानी, विज्ञान, अ-विज्ञान सब की खबर, बीमारी विचार शक्ती, दिनरात और सबेरा, दो सहेलियाँ आदि कहानियाँ संकलित है।

"वह रानी" कहानी में मधुरानी इसी प्रकार की स्त्री है जो विधवा होने के उपरान्त पर पुरुष के साथ सम्बन्ध जोडकर अपने नामपर लांछन नहीं लगाना चाहती। विवाहोपरान्त अपने पूर्व प्रेमीसे आर्थिक सहाय्यता स्वीकार करने से इन्कार करती है। और यातनाएँ भोगती रहती है।

"अमिया, तुमचुप क्यों हो गई ?" प्रेम, सेक्स और विवाह इन बातों को कहानी में केंद्रित किया है। पुरुष के लिए प्रेयसी की अपेक्षा समाज की अधिक आवश्यकता स्वीकार की गई है।

"मृत्युदण्ड" कहानी में मेजर की पत्नी पति द्वारा दुर्व्यवहार किए जाने पर भी उसकी आज्ञा का पालन करती है। उसे पति के कहनेपर परपुरुष के सामने नंगी होकर नाचना भी पडत है। इस बात पर मेजर का मित्र उठकर मेजर की हत्या कर देता है।

"बिखारी कहानी" कहानी में असामान्यसे असामन्य, कठीणासे कठीण काम प्रेम में मनुष्य कर सकता है। प्रेम का त्याग करना यह भी कोई सामान्य बात नहीं है।

"अविज्ञान" कहानी में विवाहोपरान्तभी पूर्व सम्बन्धों को कायम रखा है। लेखकने इस कहानी में भी त्याग ही श्रेष्ठ प्रेम प्रस्तुत किया है।

"सब को खबर" उस पुरुष की कहानी है जो विवाह को बन्धन, परम्परा निर्वाह, कर्तव्य पालन कुछ भी नहीं समझाता है और चार विवाह करके भी सन्तुष्ठ नही रहता।

"बीमार" कानी पारिवारीक तथा पती-पत्नी के अन्तर्जगत को प्रस्तुत करती है।

"दिन रात"और सबेरा" कहानी में काम यह मानवजीवन में आवश्य माना है, काम के बिना जीवन में मनुष्य पूर्णता की ओर जा नही सकता।

"दो सहेलियाँ" यह स्त्री की कहानी है जो अपने पति की अति कामुकता से उब गयी है, और जीवन के प्रति निरस बन गयी है।

दसवाँ भाग : इस भाग में परिवारीक व्दन्व्द कहानियाँ है। पति-पत्नी, माँ-बेटे, बाप-बेटी एक दुसरे को गलत समझा लेते है, परिवार का हर एक व्यक्ति खुद को बुध्दिमान समझाकर दुसर को हीन दृष्टि से देखते है। इसी के परिणाम स्वरूप उनके अन्तर्मन में व्दन्वद होता

रहता है। इसभाग की कहानियाँ मानव मन के रहस्योंका मनो- वैज्ञानिक शिल्पपध्दतियों व्दारा उद्घाटन हुआ है।

"महामहिम" कहानी में पत्नी पति के साथ तनाव पूर्ण मन:स्थिति के कारण समझ नही पाती कि पति के पास जाए अथवा नही, इसी विचारमें वह ना आगे जाती है न पीछे आती है , दरवाजे पर ही सोचती रहती है।

"निश्शेषा" प्रस्तुत एक भारतीय नारी की पारिवारीक कहानी है, जो व्यथाओंसे भरी है।

"यथावत" कहानी में प्रेम संबध तथा आर्थिक समस्या को प्रस्तुत करती है। इस कहानी के सभी पात्र अर्थिक स्थिति कम- जोर होने के कारण व्दन्व्द से घिरे रहते है।

"विच्छेद" कहानी में नायिका सविता समाजिक परम्पराओं का विच्छेद करना चाहती है, वह विवाहित होते हुए भी स्वयं को विवाहित नहीं मानती। वह विवाह को बन्धन न मानकर विवाह विच्छेद का समर्थन करती है।

"मुक्त प्रयो" आम कहानियों की तरह यह कहानी प्रेम और विवाह की समस्या को पाठको के सामने रखाती है।

"कष्ट" कहानी के पात्र संघर्ष होने के कारण बाहय तथा अन्तरिक दोनो प्रकार सें संघर्ष होने के कारण आत्मविश्वास

को खो बैठते हैं। प्रस्तुत कहानी आर्थिक समस्या को प्रस्तुत करती है।

"झमेला" कहानी में प्रेम और विवाह इन दो मान्यताओं पर लिखि गयी यह कहानी है। कहानी की नायिका अपने पति के साथ रहना नहीं चाहती।

"ये दो" इस कहानी में लेखकने यह बताया है कि व्यक्ति को अपनी पत्नी जीवित रहते दुसरा विवाह करने की सामाजिक स्विकृति प्राप्त नहीं है।

"वे दो" कहानी में समाज की मान्यताओं को उचित समझा है। व्यक्ति को अपनी पत्नी जीवित रहते हुए दुसरा विवाह नही कर सकता। पुनर्विवाह का निषेध किया है।

"छ: पात्र दो राहें" कहानी में प्रेम और विवाह इसे समस्या को प्रस्तुत किया है।

"जीना मरना" कहानी इस विषय को व्यक्त किया है कि मनुष्य जन्म लेता है, लेकिन उसे मृत्यू भी आनेवाली है, यह बात भूल जाता है। संसार के इस झमेले में इतना उलझ जाता है कि वह मृत्यू के विषय में कभी सोचता नहीं।

"उलटफेर" कहानी में नायिका अपनी सन्तान के लिए सर्वस्व अर्पित कर देती है, लेकिन जब उसका पुत्र अर्थोपार्जन के लिए योग्य बन जाता है तब वह अपना कर्तव्य भूल जाता है।

"मुक्ति" कहानी में लेखकने नारी के प्रति पुरुष नये-नये दृष्टिकोन से देखता है, उसे अपनी नजरों में अपराधी बनाता है, उसे हिन दृष्टिकोन से देखता है आदि विषयों को लेकर लेखकने कहानी बनायी है।

जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में नारी जीवन की कुण्ठा, अनास्था, आकांक्षा तथा व्यक्तित्व की असाधारणता को उभारने का प्रयास किया है। जैनेन्द्रकुमार के प्राय: सभी कहानियोंकी नारी पात्रों की समस्या नारी पुरुष प्रेम की समस्या है।

कहानी की नायिकाओं की यह विशेषता है कि दो-दो व्यक्तियोंसे प्रेम करती हुई पत्नीत्व एवं प्रेयसीत्व की द्वन्द्वात्मक चेतना से आक्रान्त है। सामाजिक मूल्यों एवं नैतिक वर्जनाओं से अप्रभावित रहती हुई अपनी अतृप्तिजन्य कुण्ठाओं एवं मानसिक दोषों पीडित रहती है।

शचीरानी गुर्टू के शब्दों में "उनमें उद्दाम वासनाका प्रवाह मान वेग है, जो महतपति से तृप्त नहीं होता, दुसरे पुरुष की ओर बरबस अनुधानित होती है। वे ऐसी नहीं है जिन में झंझा के झंकारों का उन्माद जगा और शान्त हो गया। हिलोरें उठी, बुलबुले कामसाये और विलीन हो गये ..... वे जीवन में अलसजडता को प्रश्रय नहीं देती... वे चाहती है, उन्हें कोई समझे, उनके रुपको परखें उसके सौन्दर्य की कोई प्रशंसा करें और उसके प्रेमपाश में अबध्द हो जाय।" इस चाह के सफलीभूत न हो पाने के कारण अथवा उसमें सम्पूर्ण प्राप्ति के अभाव में वे नारियाँ कुण्ठित हो जाती है।

उनके अन्तर्जगत में द्वन्द्व जगता है।

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियोंकी नायिकाएँ अहंवाद से प्रेरित होकर अपने नारीत्व की समग्रता का भोग प्राप्त करने के लिए आत्मिक वृत्तिसे निर्मित तथा स्वच्छन्द मनोवृतिसे संचालित होती है। जैनेन्द्र - कुमार ने भोगाकांक्षा की सम्पूर्ति में उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है। नारी पात्रों की विशेषता यह है कि अपनी अन्तर्जागतिक वृत्तियों, विकृतियों काम-पिपासाओं के कारण विद्रोहपर उतर आते हैं। पर समाज परिस्थितियों तथा संस्कृति के साथ उसका कोई औचित्य सिध्द नहीं हो पाता।

जैनेन्द्रकुमारजी की नायिकाएँ निश्चित ही श्लाघनीय भूमिकाओं में अपना महत्त्व रखती है। भलेही वह समाज के नियमों का उल्लंघन करती होंगी परंतु अपना समग्र प्रभाव छोडे बिना नहीं रहती। स्वयं टूट जातेह है घर टूटने नहीं देती। पाश्चात्य जीवन भाग की अतिवादी स्थितियों में दो-दो पुरुषों को यौन संसर्गता भोग कर भी अन्तत: भारतीय वैवाहिक संस्कार की ओर ही लौटती है।

अन्तमें नायिकाओं की विशेषता यह है कि एक विशिष्ट जीवन दर्शन, जो लेखक को कहानियाँ जीवन्त बनाने में सर्वाधिक सक्रिय एवं गतिशील रही है।

संदर्भ -

१. डॉ. कुलश्रेष्ठ, विजय जयवर्धन की पहचान पृ. ५९

२. गर्टू शाचीरानी - वैचारिकी पृ. २१०

३. डॉ. कुलश्रेष्ठ विजय जैनेन्द्र के उपन्यासों की विवेचना पृ. १४२

४. डॉ. निरजा राजकुमार जैनेन्द्र का कथा साहित्य एक सर्वेक्षण

५. जैन निर्मली जैनेन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ भूमिका पृष्ठ क्र. २०

६. जैनेन्द्रकुमार मैं और मेरी कृति पृष्ठ ३५०

७. डॉ. निरजा राजकुमार जैनेन्द्रकथा साहित्य एक सर्वेक्षण पृष्ठ क्र.

८. डॉ. शर्मा शकुन्तला जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मूल्यांकन पृ. १५६

९. डॉ. शर्मा शकुन्तला -"- पृ. १७६

१०. स्वर्ण किरण [सं] निशांत केतु १९६८ सातकथायाम और समीक्षांतर प्रक्रिया

११. पाण्डये जगदीश - कहानिकार जैनेन्द्र अभिज्ञान और उपलब्धि पृ. १३८

१२. शर्मा शकुन्तला -जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मुल्यांकन पृष्ठ क्र. ५५

१३. जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ चौथा भाग पृष्ठ ६९

१४. डॉ. उपाध्याय देवराज आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान पृ. १५५

१५. डॉ. शर्मा शकुन्तला - जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ एक मुल्यांकन पृ. ८२

१६. डॉ. शर्मा शकुन्तला - -"- पृ. ५५

१७. डॉ. शर्मा शकुन्तला -"- पृ. १३०

१८. जैनेन्द्रकुमार -"- पाँचवा भाग पृ. ७८

१९. जैनेन्द्र कुमार -"- -"- पृ. ११३

२०. गुर्टू शचीराणी : वैचारिकी पुष्ट क्र. २१०

परिशिष्ट

कहानियाँ

१]	प्रथम भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९७६
२]	द्वितीय भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८३
३]	तृतीय भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८३
४]	चतुर्थ भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८२
५]	पाँचवा भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९७८
६]	छटा भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८१
७]	सातवाँ भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८३
८]	आठवाँ भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८५
९]	नवाँ भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८४
१०]	दसवाँ भाग	:	पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली १९८५